प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य में महापंडित राहुल सांकृत्यायन का अद्‌भुत प्रतिभाशाली व्यक्तित्व है। वे हिन्दी के पुरोधा आचार्य, पुरातत्वेत्ता, अद्‌भुत यायावर, बहु भाषाविद एवं अथक साहित्य साधक थे। उन्होंने अपनी विलक्षण मेध और नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से हिन्दी साहित्य को अनेक ग्रन्थ प्रदान किये हैं। यही नहीं उनकी अबाध लौह लेखनी के स्पर्श से सहित्य का कोई कोना अछूता नहीं रहा। राहुल जी महान शब्द–शिल्पी एवं भाषा–शास्त्री थे। उनका भाषा–ज्ञान अत्यन्त समृद्ध एवं व्यापक था। प्रतिभा, क्षमता और सृजन उनके गरिमामय व्यक्तित्व के सामूहिक पहलू हैं। राहुल जी की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि उन्होंने ऊपर से नीचे आने के लिए नहीं सोचा बल्कि नीचे वालों को ही बराबर प्रेम करते रहे और उनका सम्पूर्ण साहित्यिक–सामाजिक जीवन इसी क्रिया के कार्यान्वयन में गुजरा। अपनी रचनाओं में वह मजदूरों–किसानों शोषितों से अनुराग करते हुए मिलेंगे, उनकी सहानुभूति चतुरी चमार और कुल्ली भॉट के लिए है– सन्तोषी–दुःखराम और भैया की गोष्ठियों के लिए है जिसमें मानवता की सुख–समृद्धि का संसार निहित है। सार्वदेशिक और सार्वकालिक नेतृत्व के लिए उनको मजबूत कन्धों की आवश्यकता है। इसके लिए वह नवयुवकों का आह्वान करते दिखाई पड़ते हैं।

राहुल जी मानवतावाद के प्रबल समर्थक थे। मानवी सत्ता से परे ईश्वरीय सत्ता की इयत्ता उन्हें स्वीकार नहीं थी। एक तरह से वे नास्तिक थे। प्रत्यक्ष जीवन और जगत में ही उनका विश्वास था। प्रमाण को वह सत्य का ध्रुव समझते थे और इसी सत्य के अनुसन्धान में वेदान्त, शैव, वैष्णव और आर्य समाज से होते हुए बौद्धधर्म में दीक्षित हुए। इसी क्रम में केदार से राम उदार और बाद में 'राहुल सांकृत्यायन' के रूप में उन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त की।

राहुल जी विकासवाद के कट्टर समर्थक हैं। अपनी रचनाओं में व्यक्ति–स्वातन्त्र्य की बात पर वह जोर देते हैं– मानव के लिए परतन्त्रता को वह सबसे बुरी चीज समझते हैं।

भेदभाव विहीन सामाजिक सम्बन्धो मे उनका विश्वास है। जीवन के हर क्षेत्र में कृत्रिमता को उनका हृदय स्वीकार नहीं करता– इसी कृत्रिमता के कारण धर्म–जाति–रूढ़ियॉ, परम्परायें, ऊँच–नीच, पूजा–पाठ, भगवान् ज्योतिष आदि बाधक तत्त्वों का उन्होंने बहिष्कार किया।

यह विचित्र संयोग है कि लगातार जीवन की परीक्षा देने वाले राहुल को मान्यता मार्क्सवाद ने प्रदान की– आज उनके नाम के साथ यही विशेषण जोडा जाता है। राहुल जी मार्क्सवादी थे – वह समझ रहे थे कि व्यक्ति ही समाज का निर्माता है। इसलिए उसका महत्त्व सर्वोपरि है। मानव और मानवता का एकात्म रूप है प्रेम– उसी प्रकार जिस प्रकार कि हृदय से निकले हुए शब्दों को विवेक और तर्क की अनुमति मिलने पर सत्य का उद्घाटन होता है। व्यक्ति और व्यक्ति के बीच बढ़ते घात–प्रतिघातों और स्पर्द्धाओ को पीछे छोड़ प्रेम के लक्ष्य तक मानवीय नियति को पहुंचाने का प्रयत् राहुल जी द्वारा हुआ है।

राहुल जी की प्रतिभा बहु–आयामी थी। कहानी, उपन्यास, निबन्ध, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, यात्रा–साहित्य आदि विषयों पर तो उन्होंने लिखा ही– धर्म, दर्शन और विज्ञान को भी अपनी कृतियों से समृद्ध बनाया। इतिहास के प्रचण्ड विद्वान ही नहीं थे अपितु पुरातत्व के क्षेत्र में भी उनकी अबाध गति थी, तभी तो इतिहास के विस्मृत महत्त्वपूर्ण पन्नों को प्रत्यक्ष करा सकें। इन सारी विशेषताओं के रहते हुए भी लेखक के ऊपर बुद्धिवाद ही प्रभावी है, फलस्वरूप उनकी रचनाओं में हृदय से रागात्मक सम्बन्ध कम ही जुड पाता है।

राहुल के सम्पूर्ण जीवन को खण्डों मे विभक्त करके अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट हो जाता है कि उनका जीवन 'समर्पित जीवन' था। कहीं वह तंत्र साधना के लिए समर्पित दिखलाई पडते हैं तो कहीं दयानन्द सरस्वती के मुख से निकले हुए एक–एक वाक्य को वेदवाक्य मानने के लिए उद्यत हैं– कहीं गौतम बुद्ध को मानवीय प्रेम की स्वच्छ आकृति समझकर श्रद्धावनत हैं तो दूसरी तरफ साम्यवाद की युगजनित मांग को पूरा करने के लिए आतुर है। वैसे राहुल जी को सबसे अधिक साम्यवाद ने ही प्रभावित किया है इसीलिए उनकी

रचनाओं का उद्देश्य साम्यवादी रास्ते से गुजरते हुए चलता है। साम्यवाद के प्रति अतिशय आग्रह होने के कारण ही उन पर आलोचकों ने तमाम आक्षेप लगाया है।

वस्तुतः ठोस पत्थर के टूटे टुकड़े जिस प्रकार जुड़ नहीं पाते और अपना अलग अस्तित्व रखते हैं उसी प्रकार अवस्था क साथ मनुष्य के टूटे हुए (बीते हुए) क्षणों का भी अपना अलग–अलग संसार है। प्रत्येक स्थिति में मनुष्य वर्तमान में प्रयोगशील रहा है और रहेगा– किन्तु उन अनुभूत तथ्यों के आधार पर वह समष्टि की सम्पूर्णता में पहुंचने की आकांक्षा रखता है। रहुल जी के मानवीय प्रेम की आकांक्षा का यही स्तर उनकी रचनाओं में व्यक्त हुआ है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विवेच्य विषय "हिन्दी में यात्रा–साहित्य : राहुल सांकृत्यायन के विशेष सन्दर्भ में" है। शोध प्रबन्ध में यात्रा–साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन मात्र तत्वों के आधार पर ही नहीं बल्कि समीक्षात्मक विश्लेषण के आधार पर भी प्रस्तुत किया जायेगा। इस शोध–प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है–

इस शोध प्रबन्ध का प्रथम अध्याय यात्रा–साहित्य का स्वरूप विवेचन है। सर्वप्रथम यात्रा के अर्थ, महत्व एवं यात्रा साहित्य के स्वरूप एवं उपयोगिता पर विचार किया गया है। इसके बाद यात्रा साहित्य के उद्‌भव और विकास का अनुसन्धानात्मक विवेचन करते हुए उसमें राहुल सांकृत्यायन के योगदान का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय व्यक्ति, मनीषी, साहित्यकार और भाषा तत्ववेत्ता राहुल से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत तीन उपखण्ड है। प्रथम उपखण्ड उनके जीवन से सम्बन्धित है। इसमें वंश–परिचय, जन्म, शिक्षा–दीक्षा, विवाह, पारिवारिक जीवन, व्यवसाय, पर्यटन आदि का विवेचन राहुल की आत्म–कथा 'मेरी जीवन–यात्रा' तथा राहुल विषयक अनेक सुहृदों एवं समीक्षकों के संस्मरणात्मक लेखों के आधार पर किया गया है। द्वितीय उपखण्ड में उनके विशद व्यक्तित्व की विविधोन्मुखता एवं उसके क्रमिक विकास का संक्षिप्त निदर्शन किया

गया हैं। राहुल जी की आकृति, वेशभूषा, खान–पान, दृढता, विनम्रता, नियमितता, व्यावहारिकता, अध्यवसाय और कर्मठता, जीवन्तता, साहसिकता, ज्ञानार्जन वृत्ति यायावरी वृत्ति, बौद्धिक वृत्ति, सुधारक वृत्ति, पुरातत्व एवं अनुसन्धान की प्रवृत्ति, परिवर्तनशीलता, साहित्यिक व्यक्तित्व का विकास मुझे जिस रूप में अनुमेय हो सका है, उसको विविध अभिधानों एवं विशेषणों में बांधने का प्रयत्न किया गया है। राहुल के व्यक्तित्व की सर्वोपरि विशिष्टता उसकी गत्यात्मकता है। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का जीवन सत्य के प्रयोगों में व्यतीत हुआ और उन्होंने वैज्ञानिक भौतिकवाद के रूप में जिस चिरन्तन सत्य की उपलब्धि की– उस तक पहुंचने के विविध सोपानों का उनके जीवन की घटनाओं के संक्षिप्त उल्लेखके साथ विश्लेषण इस भाग का प्रतिपाद्य है। इसके अन्तर्गत साहित्य के उपयोगी एवं सर्जनात्मक इन दो रूपों का विश्लेषण एवं तारतम्य स्थापित किया गया है। और इस आधार पर राहुल के उपयोगी एवं सर्जनात्मक साहित्य की वर्ण्य–विषय एवं गद्य रूपों के आधार पर सूची प्रस्तुत की गई है।

तृतीय अध्याय 'राहुल जी के यात्रा साहित्य' का परिचय है। राहुल हिन्दी के यायावर–साहित्यकार है, पृथ्वीकथा कहने वाले है। राहुल की यायावरी–वृत्ति ने ही उनके लेखक को जागृत किया है और उनकी देश–विदेश की यात्रायें उनके समस्त रचनात्मक साहित्य में किसी–न–किसी रूप में वर्ण्य बनकर आई है। साथ ही उन्होंने स्वतन्त्र रूप से यात्रा–साहित्य का प्रणयन किया है। 'तिब्बत में सवा वर्ष', 'मेरी यूरोप–यात्रा', 'जापान' 'मेंरी तिब्बत यात्रा', 'लद्दाख यात्रा', 'किन्नर देश में', राहुल–यात्रावली, 'यात्रा के पन्ने', 'चीन मे पच्चीस मास', गढ़वाल, 'एशिया के दुर्गम भूखण्ड़ों में', 'चीन में क्या देखा' का संक्षिप्त विवेचन इस अध्याय का प्रतिपाद्य रहा है।

चतुर्थ अध्याय राहुलजी के यात्रा–साहित्य का तत्वों के आधार पर मूल्यांकन तथा समीक्षात्मक विवेचन से सम्बन्धित है। इसमें राहुल के यात्रा–साहित्य के वर्गीकरण, उद्देश्य

आदि की विवेचना के साथ पृथ्वी कथा–लेखक की यात्रा कृतियों में प्राप्य विविध विशिष्टताओं– भौगोलिक वर्णन, समाज वर्णन, प्रकृति चित्रण, वस्तु–वर्णन, ऐतिहासिक दृष्टि, तुलनात्मक दृष्टिकोण तथा यात्रा–वर्णन–शैलियों का विस्तृत विवेचन हुआ है।

पंचम अध्याय राहुल सांकृत्ययन के यात्रा–साहित्य की भाषा–शैली के विशद विवेचन से सम्बन्धित है। इस अध्याय में शब्द–योजना के अन्तर्गत तत्सम, तद्भव, देशज, प्रान्तीय और विदेशी भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के औचित्य और अनौचित्य पर तर्कपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की गई है। जहां तक वाक्य–योजना का प्रश्न है उसमें सरल, मिश्रित, देशकालानुसार, स्थानीय, उर्दू एवं अंग्रेजी का प्रभाव तथा व्याकरण सम्बन्धी दोषों की विवेचना के साथ उसकी शोधपरक प्रस्तुति की गई है। भाषा की शक्ति में उनके द्वारा प्रयुक्त मुहावरे, लोकोक्तियॉं, सूक्तियॉं, शब्द–शक्ति, गुण और अप्रस्तुत विधान की उपयुक्तता को तर्क की कसौटी पर कसकर प्रमाणित किया गया है। यात्रा–साहित्य में प्रयुक्त उनकी विविध शैलियों को दिखाते हुए मैने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि उन्होंने उपयुक्त स्थल पर वर्णनात्मक, संवेदना प्रधान, भाव–प्रधान, चित्रात्मक, विवेचनात्मक, चिन्तनप्रधान, आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक और सैद्धान्तिक शैलियों का प्रयोग किया है।

षष्टम् अध्याय 'राहुल जी के जीवन–दर्शन' से सम्बन्धित है जिसमें उनकी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक मान्यताओं का विशद विवेचन किया गया है। राजनीतिक मान्यताओं के अन्तर्गत युगीन प्रभाव, गणतन्त्र, साम्यवाद में आस्था, समता का सिद्धान्त, आदर्श शासन व्यवस्था की परिकल्पना आदि विषयों पर उनकी जो विचारधारा परिलक्षित हुई है उसका सम्यक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्कर्ष की भावना का वैषम्य, लोकजीवन के प्रति अनुराग, सांस्कृतिक उत्कर्ष की भावना का स्पष्ट निर्देश देखने को मिलता है। साहित्य के सम्बन्ध में उनकी जो धारणा थी उसका उल्लेख मैंने विभिन्न उपशीर्षकों में सांकेतित किया है।

सप्तम् अध्याय 'उपसंहार' के रूप में है जहां पहुंचकर यह शोध–प्रबन्ध समाप्त हो जाता है। इसमें राहुल जी की हिन्दी साहित्य में उपलब्धि तथा उनके यात्रा–साहित्य की सीमाओं एवं सम्भावनाओं पर विचार किया गया है। हिन्दी यात्रा–साहित्य में उनका स्थान निर्धारित करते हुए हमारा यह सहज विश्वास है कि राहुल वर्तमान–आज तथा भविष्य–कल के सफल कलाकृती तथा संस्कृति–सारथी हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध डॉ0 कैलाशनाथसिंह रीडर हिन्दी–विभाग गो0 स्मा0 पी0जी0 कॉलेज, समोधपुर, जौनपुर तथा कला –संकायाध्यक्ष वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के सुयोग्य निर्देशन में सम्पन्न हुआ है। शोध–प्रबन्ध की रूप रेखा से लेकर शोध कार्य की परिसमाप्ति तक उनके सत्परामर्शों से मैं लाभान्वित हुई हूं। उनकी तत्परता, पाण्डित्यपूर्ण निर्देशन एवं अनुग्रह के बिना इस अनुष्ठान की पूर्ति सम्भव न थी। उनके प्रति शाब्दिक आभार–प्रदर्शन–मात्र से मैं उम्रऋण नहीं हो सकूंगी। मैं गांधी स्मारक पी0जी0 कॉलेज के गुरूजनों डॉ0 रामकिशोर वर्मा, डॉ0 राजकिशोर सिंह, डॉ0धर्मनाथ लाल डॉ0 मनोज कुमार सिंह, डॉ0 गिरिजा शंकर दूबे, डॉ0 अमरजीत पाठक, श्री मोतीलाल गुप्त, डॉ0 रमेशचन्द्र सिंह, डॉ0 राजीव रंजन, डॉ0 रणजीत कुमार पाण्डेय, श्री अरविन्द कुमार सिंह, डॉ0 राकेश कुमार यादव, डॉ0 अनन्त प्रसाद सिंह तथा डॉ0 राम नरेशधर दूबे, श्री अमर नाथ राय तथा श्री रणजीत सिंह प्रधानाचार्य श्री गॉ0 स्मा0 इण्टर कालेज समोधपुर, जौनपुर को हृदय से धन्यवाद देती हूं जिन्होंने मुझे समय–समय पर इस महत्कार्य की सम्पूर्णता के लिए प्रोत्सहित किया।

मैं अपने पिताश्री डॉ0 विक्रम बहादुर सिंह रीडर (गणित–विभाग) के स्नेह एवं अनुकम्पा की चर्चा करके उनके इस महनीय कार्य को छोटा नहीं बनाना चाहती किन्तु इतना अवश्य कहूंगी कि भगवान् सबको ऐसा ही जनक दे। मैं अपनी माता, बहनो, चाचो तथा भाइयों के साथ अपने चाचाश्री श्री अखिलेश कुमार सिंह कृषि–सहायक स्टेट बैंक आफ इण्डिया

का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने समय–समय पर मेरी पाण्डुलिपि को पढ़कर उसमें यथोचित सुधार का परामर्श प्रदान करते रहे।

मैं गांधी स्मारक पी0जी0 कालेज के प्रबन्धक डॉ0 जीतेन्द्र बहादुर सिंह का भी हृदय से आभार प्रकट करती हूं जिन्होंने अपने सत्प्रयास से इस महाविद्यालय को शोध–संस्थान के योग्य बनाया। अन्त में मैं इस सम्पूर्ण शोध कार्य का श्रेय अपने प्रियवर पति को देती हू और यह कहकर कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं कि *'मेरा अपना कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।'*

अनामिका सिंह